डीना मरियम

महिलाओं को नई आवाज़

कुमुद मोहन

कुमुद मोहन

''मैं भारत में बहुत सहज महसूस करती हूं। मुझे लगता है कि भारत से मेरा कोई विशेष संबंध है,'' क्रीम रंग की सलवार-कमीज और नारंगी दुपट्टा पहने डीना मरियम एकदम भारतीय लगती हैं। ग्लोबल पीस इनिशिएटिव फॉर विमैन की संस्थापक मरियम ने इस साल धर्म और राजनीति में महिलाओं के स्वर को मुखर बनाने के लिए भारत में दो सम्मेलन आयोजित किए हैं।

वह पूछती हैं, ''अगर स्त्रियां, जो स्वभाव से ही जीवनदायिनी हैं, पुरुषों के बराबर संख्या में नेतृत्व की स्थितियों में आ जाएं तो क्या हमारा समाज कम हिंसक, बच्चों और युवाओं की आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान देने वाला और पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं बन जाएगा?''

भारत से मरियम का सम्बन्ध करीब 35 साल पहले न्यू यॉर्क की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में धार्मिक साहित्य में स्नातकोत्तर अध्ययन करते जुड़ा। उनके शोध प्रबंध का विषय भगवद्गीता और ओल्ड टेस्टामेंट की बुक ऑफ़ जॉब का तुलनात्मक अध्ययन था। उसी दौरान उन्होंने परमहंस योगानन्द की लिखी ऑटोबायॅग्राफ़ी ऑफ़ ए योगी भी पढ़ी। ''इस किताब ने मेरा जीवन बदल दिया। योग और ध्यान मेरे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए।''

बचपन से ही कला और संस्कृति सम्पन्न वातावरण में पली-बढ़ी मरियम के लिए आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होना सहज ही था। उनके माता-पिता कला संग्राहक थे, पिता डेविड फ़िन मूर्तिशिल्पों के छाया चित्रकार थे। वर्ष 1988 से 1993 तक स्कल्पचर रिव्यू पत्रिका की सम्पादक रहते मरियम ने कला के आध्यात्मिक पक्ष पर लिखना पसंद किया। वह कहती हैं, ''मैंने लिखा कि किस तरह कला हमें उच्चतर वास्तविकताओं के संपर्क में ला सकती है।''

हारवर्ड डिविनिटी स्कूल के सेंटर फ़ॉर रिलिजन एंड डिप्लोमेसी और ऑल इंडिया मूवमेंट फ़ॉर सेवा के बोर्डों की सदस्य रह चुकी डीना मरियम को वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित मिलेनियम वर्ल्ड पीस समिट ऑफ़ रिलिजियस एंड स्पिरिचुअल लीडर्स की सह-अध्यक्ष बनने के लिए निमंत्रित किया गया।

न्यू यॉर्क में हुए इस शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए डीना मरियम को यह देखकर बड़ा धक्का लगा कि 1500 प्रतिनिधियों में बस मुट्ठीभर ही स्त्रियां थीं। 25 वक्ताओं में कुल दो स्त्रियां थीं। उन्हें लगा कि पूर्वी धर्मों और परम्पराओं को सम्मेलन में कम प्रतिनिधत्व मिला।

इसलिए वह संसारभर की विशेषत: भारत, थाइलैंड, ताइवान, इस्राइल, फिलिस्तीन, इराक, सूडान और कम्बोडिया की आध्यात्मिकता, व्यवसाय, शासन और पर्यावरण के क्षेत्र की स्त्री नेताओं से संपर्क साधने के काम में जुट गईं।

इस प्रयास की परिणति हुई 2002 में जिनीवा, स्विटजरलैंड में सम्पन्न हुई एक और संयुक्त राष्ट्र विश्व शांति शिखर वार्ता में जिसमें 500 स्त्री नेताओं ने भाग लिया। इस शिखर सम्मेलन ने ग्लोबल पीस इनिशिएटिव फ़ॉर विमैन की नींव रखी।

डीना मरियम कहती हैं, ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि पालन-पोषण और करुणा के अपने अन्तर्जात गुणों के चलते स्त्रियां संसार को अधिक संतुलित बनाने और एक ऐसी गतिशील इच्छा शक्ति के सृजन में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं जो धर्म, संघर्ष, गरीबी और पर्यावरणीय क्षति से क्षत-विक्षत संसार के सामने खड़ी बहुत-सी चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान कर सके। क्या आप जानते हैं कि कई मूलवासी इंडियन कबीलों में युद्ध छेड़ने से पहले कबीले की बूढ़ी स्त्रियों की अनुमति ली जाती थी? इससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि युद्ध ही अंतिम, एकमात्र उपाय है क्योंकि अगर विकल्प की संभावना बची हो तो स्त्रियां अपने बेटों को नहीं जाने देंगी।''

जिनीवा शिखर सम्मेलन के बाद 6 से 10 मार्च 2008 तक ''मेकिंग वे फ़ॉर द फ़ेमिनिन फ़ॉर द बेनेफिट ऑफ़ द वर्ल्ड कम्युनिटी'' विषय पर जयपुर, राजस्थान में पांच दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जो अन्तरराष्ट्रीय स्त्री दिवस के साथ-साथ चला। इसमें अफ़गानिस्तान, इराक, ईरान, इस्राइल और फिलिस्तीन जैसे संघर्षरत क्षेत्रों सहित संसार के 50 देशों के विभिन्न धर्मों के अनुयायी 450 स्त्री-पुरूषों ने शासन, संघर्ष और शांति जैसे मुद्दों पर चिंतन किया। उन्होंने अपने अनुभवों और अध्यात्म-अहिंसा और सत्याग्रह से समस्याओं के समाधान पर चर्चा की।

इसके तुरंत बाद ग्लोबल पीस इनिशिएटिव फ़ॉर विमैन ने यू.एस. इंस्टीयूट ऑफ़ पीस के साथ भागीदारी में 40 इराकी युवाओं को शांत और सुरक्षित इराक के निर्माण पर संवाद के लिए धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश आमंत्रित किया। इनमें गैर-सरकारी संगठनों के कार्यकर्ता, चिकित्सक, वकील और वास्तुकार शामिल थे।

मरियम बताती हैं, ''अंत में हम सभी इस निश्कर्ष पर पहुंचे कि हम एक ही परिवार हैं और किसी एक की पीड़ा से सभी पीड़ित होते हैं। जयपुर में हुआ संवाद अब जाकर स्पष्ट हुआ।'' शिखर सम्मेलन का एक और महत्वपूर्ण परिणाम रहा कोलोरैडो में आयोजित होने वाले पहले अमेरिकी समिट ऑफ़ द ग्लोबल पीस इनिशिएटिव ऑफ़ विमैन की तैयारी। यह ''एक राष्ट्र के रूप में हमारी एकात्मता और करुणा के बोध को गहरा करने के लिए अमेरिका के आध्यात्मिक स्वरों को एकजुट करने'' पर केंद्रित है।

कुमुद मोहन स्वतंत्र लेखिका और फोटो-पत्रकार हैं और नई दिल्ली में रहती हैं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

ग्लोबल पीस इनिशिएटिव ऑफ़ विमैन
http://www.gpiw.org/index.html
यू.एस. इंस्टीट्यूट ऑफ़ पीस
http://www.usip.org/

धर्म